[श्री एस० एम० जोशी]

इन शब्दों के साथ जो प्रस्ताव रखा है, उसका मैं समर्थन करता हूं, क्योंकि मैंने इसका स्वागत किया है।

15-55 hrs.

RE: INCIDENT IN THE PUBLIC GALLERY—*Contd.*

MR. CHAIRMAN: Shri Prem Chand Verma.

SHRI NATH PAI: What happened to my point of order? When are you going to inform the House?

MR. CHAIRMAN: I am just trying to get the papers. She has been kept for interrogation. The lady was trying to raise slogans. So, she was removed from the galleries and she was kept for interrogation.

SHRI NATH PAI: A detailed statement will be made here.

MR. CHAIRMAN: I have asked for the papers.

SHRI NATH PAI: All the information will be given to us.

MR. CHAIRMAN: If not today, tomorrow morning.

SHRI JAGANNATH RAO JOSHI (Bhopal): The interrogation should not take so long. That should have been over now.

MR. CHAIRMAN: She may have been released.

15-56 hrs.

STATUTORY RESOLUTION RE. PROCLAMATION IN RELATION TO PUNJAB; AND PUNJAB STATE LEGISLATURE (DELEGATION OF POWERS) BILL—*contd.*

श्री प्रेम चन्द वर्मा : जो प्रस्ताव आया है इसका मैं समर्थन करने के लिए खड़ा हुआ हूं। मुझे इस वक्त पंजाब के इतिहास की कुछ थोड़ी सी याद आ रही हैं। पंजाब में अठारह साल तक कांग्रेस पार्टी की सरकार रही है और कांग्रेस पार्टी ने एक मजबूत जम्हूरी सरकार जनता को दी। लेकिन 1967 के चुनाव में ऐसा न हो सका। अकालियों ने, जन संघियों और कम्युनिस्टों ने जो आपस में शत्रु थे, अकाली जन संघ को कहते थे कि ये अमरीका के एजंट हैं, जन संघ वाले अकालीयों को कहते थे कि ये हिन्दी के विरोधी हैं और मास्टर तारा सिंह के बारे में तो यहां तक कहते थे कि ये तो पाकिस्तान के एजंट हैं, जन संघ कम्युनिस्टों को कहते थे कि ये रूस के अनुयायी हैं और रूस के एजंट हैं, सरकार बनाई। तीनों दल जो आपस में कभी बात करने के लिए तैयार नहीं थे इन्होंने सरकार बनाई। कांग्रेस को हकूमत की चाह नहीं थी। इस वास्ते वहां पर युनाइटेड फ्रंट के नाम से एक सरकार बनी। सरदार गुरनाम सिंह उसके चीफ मिनिस्टर थे। उस सरकार में श्री डांग फूड मिनिस्टर थे। इन दोनों ने मिल कर हिमाचल प्रदेश को अनाज भेजना बन्द कर दिया। हिमाचल में बहादुर डोगरे रहते हैं जो हिन्दुस्तान की सरहदों की रक्षा करते हैं। वहां अनाज कम होता है लेकिन वहां देश के लिए जान देने वाले अपना खून देने वाले बहुत हैं, ऐसे लोगों की तादाद बहुत ज्यादा है जो देश की आजादी के लिए, देश की हिफाजत के लिए अपना सिर कटवाने के लिए तैयार हैं। वहां की जनता को पंजाब ने अनाज देना बन्द कर दिया। हमारे बच्चे, हमारी बहनें, हमारी बहुएं, हमारी बेटियां जब सरहद पार करके हिमाचल में जाती थी तो उनकी तलाशी ली जाती थी, उनके साथ बुरा बरताव किया जाता था और तब हमें सोचने के लिए मजबूर होना पड़ा था कि हम हिन्दुस्तान में रह रहे हैं या किसी दूसरे मुल्क में रह रहे हैं। यह गुरनाम सिंह मिनिस्ट्री का एक

कारनामा था। गुरनाम सिंह मंत्रिमंडल को मालूम नहीं था कि जम्हूरी निज़ाम में किसी का कुछ पता नहीं कि वह कब तक गद्दी पर रहेगा और कब तक नहीं रहेगा। अपने इस प्रकार के कारनामों की वजह से वह मिनिस्ट्री खत्म हुई।

उसके बाद गिल मिनिस्ट्री वहां कायम हुई। कांग्रेस ने उसको अपनी सपोर्ट दी लेकिन वह मंत्रिमंडल में शामिल नहीं हुई। हमने तजुर्बा करना चाहा, हमने चाहा कि पंजाब में जम्हूरियत कायम रहे, जम्हूरियत का राज रहे, जम्हूरियत जिन्दा रहे, इसलिये हमने माइनोरिटी हुकूमत को बिना कोई ओहदा कबूल किये हुये, अपनी सपोर्ट दी। हमने कहा कि काम करो और अगर यह तजुर्बा अच्छा रहेगा तो इसको आगे भी चलाया जाएगा। लेकिन बदकिस्मती से तजुर्बा अच्छा साबित नहीं हुआ। एक कहावत है 'चोर के कपड़े और डांगों के गज़'। जो चोरी का कपड़ा होता है वह गजों से नापा नहीं जाता है बल्कि लाठी से या बांस से जो भी हाथ लग जाए उससे नापा जाता है। उस मिनिस्ट्री के खिलाफ जो इल्ज़ाम लगे मैं समझता हूं कि वे शर्मनाक हैं और उसके लिए हम भी कुछ हद तक जिम्मेदार हैं और इखलाकी तौर पर जिम्मेदार हैं क्योंकि हमने उस मिनिस्ट्री को अपनी सपोर्ट दी थी और अगर हमने अपनी सपोर्ट न दी होती तो वहां वह सरकार नहीं बन सकती थी। इसलिए यह सीधी सी बात है कि उस में हमारा थोड़ा बहुत दोष था। लेकिन यह दोष जान-बूझ कर हमने इनवाइट किया हो ऐसी बात नहीं है। अपोजीशन वाले अगर हमें कोसें तो यह ठीक नहीं है। जम्हूरियत को जिन्दा रखने के लिए हमने यह तजुर्बा किया। अगर इसके बाद कोई दूसरी पार्टी हुकूमत कायम कर सकती थी तो वह इसके लिए स्वतंत्र थी। लेकिन वह भी इस में सफल नहीं हुई है। जहां इस सपोर्ट को वापिस लेने के लिए पंजाब क़ांग्रेस के लीडर बधाई के पात्र हैं। वहां कांग्रेस हाई कमांड भी बधाई की पात्र है। पंजाब कांग्रेस ने एक जबर्दस्त तहरीक जारी रखी कि गिल मिनिस्ट्री को तोड़ दिया जाए।

मैं एक दो बातों की तरफ आपका ध्यान दिलाना चाहता हूं। पहली प्रेस कान्फ्रेंस में हमारे पंजाब के गवर्नर ने क्या कहा है इसको आप देखें। यह स्टेट-मेंट उनका अखबारों में छपा है। उन्होंने कहा है कि मेरे पास पोलीटिकल विक्टि-माइज़ेशन और फ़ाल्स केसिज़ वगैरह के बारे में बड़ी सीरियस कम्प्लेंट्स आती रही हैं, लेकिन मैं कुछ नहीं कर पाया, क्योंकि मैं एक आईनी हैड हूं। मैं अर्ज़ करना चाहता हूं कि जम्हूरियत में विश्वास करने वाला कोई भी आदमी इस स्टटमेंट को पढ़ कर रोयेगा। ऐसी जम्हूरियत का क्या फ़ायदा है, जिस में हैड आफ़ स्टेट को तरह-तरह की कम्प्लेंट्स मिलें और वह उन के बारे में कुछ भी न कर पाये? गवर्नर ने राष्ट्रपति को लिखा है :

"The inevitable outcome of lack of support was the use of governmental machinery by the Ministry to raise its own following."

16 HRS.

उन्होंने कहा है कि अकलियत को अक्सरियत बनाने के लिये सरकारी जराय और सरकारी प्रैसर को इस्तेमाल किया गया है। इस के साथ ही वह कहते हैं कि इस के बावजूद मैं कुछ नहीं कर सकता था, क्योंकि मैं आईनी हैड हूं। मैं होम मिनिस्टर साहब से दरख्वास्त करूंगा कि अगर कोई सरकार ठीक तरह से काम नहीं करती है, अगर जनता के साथ बेइन्साफ़ी होती है, अगर कोई चीफ़ मिनिस्टर रिश्वत या लालच दे कर लोगों

[श्री प्रेम चन्द वर्मा]

को अपने साथ मिलाता है, तो गवर्नर को उस के ख़िलाफ़ इम्मीडिएट एक्शन लेने का अख्त्यार होना चाहिए। मेरा मुतालिबा है कि इस को मद्देनज़र रखते हुए गवर्नर के अख्त्यारात को बढ़ाना चाहिए।

सभापति महोदय, मेरा पंजाब से बड़ा ताल्लुक है। हम लोग हाल ही में पंजाब से अलग हुए हैं। मुझे इस बात का दुख है कि जो पंजाब इतना अच्छा और बड़ा सूबा रहा है, उस की हालत इतनी ख़राब हो गई है।

अभी मेरे दोस्त, श्री इन्द्रजीत गुप्त, ने कांग्रेस पर कुछ इल्ज़ाम लगाए हैं। उन्होंने यह भी कहा है कि पंजाब में फिर युनाइटिड फ्रंट की गवर्नमेंट बनेगी। मैं उन को भरोसा दिलाता हूं कि पंजाब की जनता समझदार है, अब वह खोखले नारों से धोखे में आने वाली नहीं है। मेरे दोस्त देखें कि नये चुनाव में कम्यु-निस्ट पार्टी का कोई मेम्बर आता भी है या नहीं। मैं तो समझता हूं कि पंजाब से कम्युनिस्ट पार्टी का नाम भी मिट जायेगा।

जहां तक जनसंघ का सम्बन्ध है, उस ने हिन्दी के नाम पर चुनाव लड़ा और चुनाव में जीता। लेकिन उस के बाद वह उन्हीं लोगों के साथ इकट्ठे बैठा, जो हिन्दी के मुख़ालिफ़, थे जिन्होंने हिन्दी का कत्ले-आम किया, और वह सिर्फ़ इस लिए कि इस तरह जनसंघ वालों को कुर्सियां मिल गई। उन लोगों को न तो हिन्दी से कोई प्यार है और न जनता के हित का कोई ख़याल है।

मेरे दोस्त, श्री श्रीचन्द गोयल सामने बैठे हैं। वह चण्डीगढ़ से चुन कर आये हैं। आज हालत यह है कि चण्डीगढ़ का जनसंघी कहता है कि वह यूनियन टेरीटेरी रहे, पंजाब का जनसंघी कहता है कि वह पंजाब में मिला दिया जाये और हरियाणा का जनसंघी कहता है कि वह हरियाणा में मिला दिया जाये। इस तरह की बे-उसूल पार्टियों से क्या उम्मीद की जा सकती है? पंजाबी की एक कहावत है कि छाज बोले तो बोले, छलनी कैसे बोले, जिस में इतने छेद हैं? कम्युनिस्टों, जनसंघियों, अकालियों वग़ैरह में इतने छेद हैं कि वे बोलने के काबिल नहीं हैं। अगर वे फिर भी बोलते हैं, तो ग़लती करते हैं।

किसी को पूछा गया कि पंजाब का क्या होगा। उस ने कहा कि नतीजे का पता दस महीने के बाद लगेगा। दस महीने के बाद आम तौर पर बच्चा पैदा होता है। लेकिन बदकिस्मती से साढ़े छः महीने तक गुरनाम सिंह सरकार रही और नौ महीने तक गिल सरकार रही। इस तरह युनाइटिड फ्रंट की पोज़ीसन जनता ने देख ली कि वह दस महीने तक भी काम नहीं कर सकी, जो कम से कम समय है।

गिल मिनिस्ट्री और गुरनाम सिंह मिनिस्ट्री के मंत्रियों के ख़िलाफ़ कुछ इल्ज़ाम लगाये गये हैं। मैं होम मिनिस्टर साहब से अर्ज करूंगा कि अगर इस देश में जम्हूरियत को ज़िन्दा रखना है, तो किसी भी डेमोक्रेटिक सरकार के ख़िलाफ़ जो इल्ज़ाम लगाए जाते हैं, चाहे वह सरकार हमारी हो या किसी भी पार्टी की हो, उन इल्ज़ामों की तहकीकात करनी चाहिए। गिल मिनिस्ट्री और गुरनाम सिंह मिनिस्ट्री के ख़िलाफ़ लगाये गये इल्ज़ामों की तहकीकात चुनाव से पहले कराई जानी चाहिए, और एक निष्पक्ष कमीशन के द्वारा कराई जानी चाहिए, ताकि दूध का दूध और पानी का पानी हो सके और जनता को पता लग सके कि उन लोगों की असलियत क्या है।

मैं इस प्रस्ताव का अनुमोदन करता हूं। मैं आप को धन्यवाद देता हूं कि आप ने मुझे समय दिया।

SHRI K. M. ABRAHAM (Kottayam): We are now discussing about the President's rule in Punjab. After the last general elections, I think this is the sixth State where President's rule has been imposed. The first was in Rajasthan, then in Haryana, the third in West Bengal, then in UP, then in Bihar, and now in Punjab.

There are three kinds of administration now in the country. In certain States, there are Congress Governments; in certain others, there are non-Congress Governments and in most of the States of North India, there is President's rule.

During the last elections, the people gave a verdict against the eligibility of the Congress to govern them. But by sheer manipulation or some means or other, the Congress is trying to come back to power in each and every State.

Coming to Punjab, who is primarily responsible for the chaotic situation prevailing there? It is the Congress, because when they decided to support the Gill Ministry, this chaotic situation started. Let us see what is stated in the second page of the Governor's report to the President:

"The Congress Legislature Party extended its support to the Gill Ministry. Such an arrangement was *ab initio* fraught with instability, as the Gill Ministry consisted of and was led by legislators who were drawn together not by any ideological affinity but by a desire to gain political power".

It was only for political power that the Gill Ministry was imposed. The Congress started it, with the ultimate aim of overthrowing the U.F. Ministry. This started the chaotic situation in Punjab.

Then again, let us turn to page 4 of the report of the Governor:

"The present political uncertainty and the consequent adverse effect on the morale of the services can be removed only by immediate dissolution of the Legislative Assembly followed in due course by mid-term election".

The morale of the services has gone down—it is reported by the Governor. Had it gone down at this time? No. It went down when the Gill Ministry was imposed. At that time the Governor ought to have given the report to the President so that he might dissolve the assembly and take over the administration of Punjab. The Opposition parties also, I remember, asked for the President's rule and for the dismissal of the Gill Ministry. This nine months' rule was a gift given to Gill by the Congress for toppling the UF Ministry. Repressive measures were taken in that State. For example, when the Opposition Parties decided to demonstrate in Chandigarh, the whole township was cordoned off by police. The Government employees demanded higher DA and allowances. 2,000 of them were transferred on political grounds alone. My hon. friend Mr. Indrajit Gupta explained what was done to the Punjab Roadways workers, when they demanded payment of bonus agreed to be paid. 150 were dismissed; 200 were suspended and 900 workers had to undergo trial in courts. 98 cases are still pending. Ranbir Dhillon, Secretary of the Punjab Subordinate Service Federation was dismissed from service. Jaswant Singh Sambra and 14 others of the Punjab Roadways Workers' union were arrested and tortured in jail, both by conventional methods and also the modern method of electronic shock. After that cases were taken against them. During this period, the Gill Ministry did not redress the grievances of the people but was calling Mahesh Yogi to preach meditation. He was also looking for somebody in the Congress Party to help him so that he would not be ousted

[Shri K. M. Abraham]

from the Ministry. The budget was passed in just two minutes, a thing unheard of in the history of parliamentary democracy. Everybody spoke about the corrupt method of Gill's rule—Gill and his company. Company means his Congress supporters. Not only the Members from the Opposition but even Congress Members have now made complaints. Therefore, the first thing that I demand is the appointment of a high power committee so that it can go into the allegations made by the Opposition parties against the Gill Ministry. Secondly, I demand that all the people's grievances must be redressed and all the cases, including victimisation cases, must be withdrawn.

We must not postpone the election in Punjab for long. Nobody, not even the Congress, can say that due to floods or drought, we cannot conduct the election now. We can do it in November itself. Parliament must decide that the election must be conducted as early as possible.

श्री किकर सिंह (भटिंडा) : सभापति महोदय, मैं शुक्रिया ग्रदा करता हूं कि ग्रकाली पार्टी की तरफ से हमारी जो रिक्वेस्ट थी उस को ग्राप ने मान लिया ग्रौर पंजाब गवर्नमेंट को हटा कर वहां पर राष्ट्रपति राज कायम कर दिया। इस का मैं धन्यवाद करता हूं।

दो-चार बातें मैं हाउस के सामने ग्रौर पेश करना चाहूंगा। बदकिस्मती से पंजाब गवर्नमेंट जो यूनाइटेड फ्रंट की बनी थी उस की एक मिसाल कायम हो गई थी। पुरानी बात हम लोग कभी कभी सुना करते हैं कि महाराजा रणजीत सिंह का राज जो था वह हिन्दू, मुसलमान ग्रौर सिखों का साझा राज समझा जाता था। उसी तरह का राज संत बाबा फतेह सिंह की कृपा से पंजाब की यूनाइटेड फ्रंट का हुग्रा था। लेकिन बदकिश्मती की बात यह हुई कि यह कांग्रेसी लोग जिनकी कि कुर्सियां छिन गई थीं उन्होंने उसे यूनाइटेड फ्रंट सरकार के साथ वैसा ही बर्त्ताव किया जो महाराजा रणजीत सिंह के खिलाफ डोगरों ने किया था। वह पार्ट उन्होंने ग्रदा किया। यह हमारे लिए बदकिश्मती की बात है कि वैसा राज हम लोग कायम न रख सके इन लोगों की वजह से। मैं धन्यवाद करता हूं कि ग्रब ग्राप ने यह हमारी रिक्वेस्ट सुन ली है।

दूसरी बात यह है कि जो गिल राज के खिलाफ मेमोरेंडम पेश किया गया है उस की तहकीकात करवानी चाहिए। यह हमारी मांग है।

इस के ग्रलावा जो यह लोग बोल रहे हैं कि गिल सरकार ने यह कर दिया, वह कर दिया, यह ग्रकाली पार्टी को छोड़ कर इधर ग्रा गए तो यह गन्दा हो गया, पहले नहीं था तो यह मैं जरूर इन से कहूंगा कि यह लोग भूल जाते हैं कि यह तोड़फोड़ की बातें जो हैं यह कांग्रेस ने पहले की हैं। उन्होंने बल्देव सिंह जी को हमारी पार्टी से तोड़ कर गड़बड़ पैदा कर दी। फिर तोड़फोड़ की बातें शुरू हुई। हम भी चाहते थे कि ऐसी बातें न होने दें तो हम ने भी तोड़-फोड़ की। तो यह दोष पहले कांग्रेस का है। यह रूलिंग पार्टी से पहले शुरू की गई फिर दूसरी पार्टीयों ने भी किया। इसलिए गुनहगार रूलिंग पार्टी है।... (**व्यवधान**)... दूसरों ने तो बाद में किया न ? ज्यादा गुनहगार इसलिए कांग्रेसी हुए न ?

दूसरी बात यह है कि सरदार ढिल्लों साहब ग्रभी कह रहे थे कि पंजाबी सूबा बनने के कारण पंजाब के तीन हिस्से हो गए, यह बदकिस्मती हुई। तो मैं यह विनंती करूंगा कि कांग्रेस गवर्नमेंट के, सेंटर के हुक्म से सारे हिन्दुस्तान के

सूबे बने इसलिए यह भी हमारी मांग थी कि हम भी अपना खित्ता मांगें। बदकिस्मती की बात यह है कि दूसरे सूबों के जो वजीर होते हैं वह इस्तीफे देने पर कायम हो जाते हैं तो सेंटर वालों को यह मानना पड़ता है कि उस की बात सुनी जाय। हमारी बदकिस्मती है कि हमारे जो लोग सेन्टर में होते हैं, यानी पंजाब के जो सिख मिनिस्टर यहां पर होते हैं, जैसे सरदार स्वर्ण सिंह हुए या कोई और हुए, वे कुर्सी से इतना चिमटे हुए हैं कि हमारी बात को सुनते ही नहीं और इसी वजह से हमारी बात कमजोर रह जाती है। वे डोगरों का सा पार्ट पंजाब के साथ अदा करते हैं। आज जो चीज़ चल रही है उसकी ज़िम्मेदारी सैन्ट्रल गवर्नमेन्ट पर आती है— इस लिये जैसा मैंने पहले कहा कैरों साहब ने जो मिसाल पंजाब में कायम की, उस का नमूना दुनिया भर में कहीं नहीं मिलता, कहीं भी ऐसा नहीं हुआ कि निहत्थे लोगों पर जेलों में गोलियां चलाई जांय, उन को शहीद किया जाय—लेकिन सरदार कैरों ने वह कर के दिखलाया। अब जो गिल सरकार आई उस ने भी ऐसी ही मिसालें कायम कीं, जैसा कभी किसी देश में नहीं हुआ। असेम्बली के मेम्बरों को, लोगों के नुमाइन्दों को, निहत्थे लोगों को पुलिस के ज़रिये कटवाया और दूसरी तरफ 15 मिनट के अन्दर इतने बड़े सूबे का जो ज़िम्मेवाराना बजट था, उस को पास करवा लिया—यह मिसाल उन्होंने पंजाब में कायम की। हाई कोर्ट ने उन के इस गलत काम की खूब अच्छी तरह से मज़म्मत की और उस से वहां की जनता को बहुत खुशी हुई। यही गिल साहब हमारी मिनिस्ट्री में विद्या मंत्री थे तो जब लोगों से मिलने जाते थे, तो उन का स्वागत सेहरे से किया जाता था, लेकिन जब वह चीफ़ मिनिस्टर हुए तो उन्हीं लोगों ने उन का स्वागत छित्तरों से किया। यह सब उनके कारनामों की वजह से हुआ। लेकिन इस में ज़िम्मेदारी सेन्ट्रल गवर्नमेंन्ट पर भी आती है— इन्होंने सुप्रीम कोर्ट में दबाव डाल कर ऐसा कानून पास करा दिया कि दुनिया भर में हिन्दुस्तान को बदनाम कर दिया।

मुझ को क्षमा कीजिये मैं कभी ऐसी बात कहना नहीं चाहूंगा, लेकिन दुख के साथ कहना पड़ता है—किसी स्याने ने दो-तीन लाइनें लिखी हैं—हिन्दुस्तान के अब तक तीन प्रधान मंत्री हुए हैं, उन के मुताल्लिक ये तीन लाइनें लिखी हैं जिसमें उन की देशभक्ति का ज़िक्र किया गया है—

1. नेहरू जी ने नहर बनवाई और लगवाये कूप।

शास्त्री जी दूसरे प्रधान मंत्री थे, उन्होंने—

2. शास्त्री जी ने शस्त्र मंगवाये और मरवाये भूप।

अब की प्रधान मंत्री इन्दिरा गांधी जी हैं, इन की सेवा जो लोगों के सामने है, वह इतनी लाइन में आ जाती है—

* * * * *

ये सेवा हमारे प्रधान मंत्रियों ने की है, जो कांग्रेस के ज़िम्मेदार हैं, देश के ज़िम्मेदार हैं।

आपने जो राष्ट्रपति राज वहां लागू किया है, मैं उस का स्वागत करता हूं।

SHRI SAMAR GUHA (Contai): Sir, the political drama in Punjab has left rather a good lesson for the whole of Indian democracy, I should say. The unscrupulous scuttler of the popular form of Government has been unceremoniously scuttled by its own mentor which he deserved. This will have two lessons.

* Expunged as ordered by the Chair—Please *see* page 19857.

[Shri Samar Guha]

One is, the future quisling or, to use a milder term, the future defector will have a lesson from the Punjab Act that hypocritical honeymoon with the political seductor lasts only to that extent when it suits the purpose of that person. Therefore, the future quisling or defector will take a lesson from the Punjab drama. Secondly, the experiment of the so-called minority government, once in West Bengal and again in Punjab, this theory has not only been pricked but it has proved that the so-called minority government is nothing but puppet government of the Congress, played by their Congress mentors. The minority government has proved nothing more than some political chimera. Already, Shri Verma has quoted the misdeeds or the black deeds of the Gill Ministry.

The Governor himself in his press statement said that he has received innumerable complaints about favouritism, political victimisation, implication in false cases etc. It was reported in *Tribune* that when the Governor called on the President Dr. Zakir Hussain, Prime Minister Indira Gandhi and Home Minister Shri Y. B. Chavan he said that it is understood that in the last few days the Ministry had issued a number of permits, transferred some officers, promoted some officers and also raised the salaries of certain categories. He also said that law and order have completely broken down. Then he tried to explain why he did not take action earlier. He said that a tremendous amount of such complaints have been received but as a constitutional head of the State he was powerless to deal with them effectively.

[MR. DEPUTY SPEAKER *in the chair.*]

So, he forwarded them to the then Chief Minister and informed the President in his confidential reports on the affairs in Punjab. He has also said that he could not recommend President's Rule earlier because the Ministry enjoyed support of the majority of the legislators. But in another report he has said that law and order situation has worsened. Therefore, I should say that his plea that the Ministry enjoyed the majority support of the legislators is not tenable. He should have, I should say, asked for or recommended President's Rule much earlier.

He has also said that he has set up a cell to deal with the complaints that have been received against the Gill Ministry. Since such a large number of complaints cannot be dealt with by mere cells, I would join my friends in demanding that an inquiry commission should be set up to deal with the misdeeds of the Gill Ministry.

I will give just one example to show how barbarously the Gill Ministry treated the opposition members. One of our party members, whose name is Shri Krishna, is the executive member of the Punjab Provincial Praja Socialist Party. He is a well-known journalist and a trade unionist. Not only that, he was in jail for several years during the 1942 movement. He had altercation with the DSP, Ludhiana on various occasions because he was taking up the case of people and lodging complaints against certain district officers.

MR. DEPUTY-SPEAKER: He should conclude now.

SHRI SAMAR GUHA: Sir, I have not taken my six minutes yet. I am finishing. Shri Krishna is a trade union worker, connected with the railway organisation there. Some six months back he went to the Ludhiana station where he found some police officers and some railway officers have arrested two girls. These two girls were escaping when some policeman, he and another trade union worker took them to Ludhiana thana. Suddenly that DSP came there and as soon as he came there he saw that Shri Krishna was there; so he said, "He is the PSP man; arrest him." He was arrested immediately. He was handcuffed on the back side. Not only was he taken out in apro-

cession but his whole face was tarnished with coaltar. He was shoed on the whole route and was taken in a procession through all the streets of Ludhiana.

This is the barbarous treatment that was meted out even to a political worker of a recognised party of an all-India standard. I can give you many more instances, but this is one single instance of how the Gill Ministry encouraged officers to treat political workers in such a brutal and barbarous way.

Six months ago Shri Nath Pai forwarded the whole case to Shri Chavan and Shri Chavan pleaded his inability saying that law and order problem was to be dealt with by the State Ministry. Shri Surendranath Dwivedy has also written to the Governor. Through you I would request the Minister of State for Home Affairs that this matter should be brought to the attention of the Governor and a person who has done such a barbarous act should be penalised.

MR. DEPUTY-SPEAKER: Shri Goyal.

SHRI A. S. SAIGAL (Bilaspur): Sir, I rise on a point of order. Shri Kikar Singh said something about Pandit Jawaharlalji Nehru and after that he said something about Shrimati Indira Gandhi. I do not want to use those vulgar words.............. (*Interruption*). That is wrong to say in the House. I will request you that you go through them......(*Interruption*). मैं आपसे रिक्वेस्ट करूंगा कि जो उन्होंने अपना व्याख्यान दिया है उसको आप देखने की कृपा करें। उन्होंने जो वल्गर शब्द यूज किए हैं, मैं उन को यहां पर कहना नहीं चाहता।... (व्यवधान) ... आप लोग वल्गर होना चाहते हैं लेकिन मैं वल्गर नहीं होना चाहता। तो मेरी आपसे यह रिक्वेस्ट है कि इन चीजों को आप देखें और उन सब बातों को आप प्रोसीडिंग्ज से अलग करें। किसी भी प्राइम मिनिस्टर के खिलाफ इस तरह के शब्दों का इस्तेमाल करना ठीक नहीं है। इसलिए आप इसको अच्छी तरह से एग्जामिन करें।

MR. DEPUTY-SPEAKER: I have understood the point of order.

SHRI SRINIBAS MISRA (Cuttack): This is a matter of serious concern. Are we gentlemen, decent people or are we people from the streets? The words that have been used would not do any credit to anybody, far less to the House.

MR. DEPUTY-SPEAKER: He has every right to raise at any time a point of order regarding the language used in the House. I will see the record. Just now, offhand, I cannot decide. But he has a right to record his protest regarding some expressions used, whether they are unparliamentary or not, whether they are in keeping with dignity or not. I will examine that, and if there is anything indecent I will expunge it.

श्री कामेश्वर सिंह (खगरिया) : मेरा व्यवस्था का प्रश्न है, रूल 110 के अन्तर्गत।

मन्त्री महोदय ने इस सदन के सामने जो बिल पेश किया है, राष्ट्रपति जी को शक्ति प्रदान करने के लिए, वही गलत है। इसलिए इसको बदलना चाहिए। इसमें लिखा हुआ है :

"The Bill is to be replaced subsequently by a new Bill which substantially alters the provisions therein."

इसलिए मेरा कहना यह है कि मन्त्री महोदय इस बिल को वापिस लें और इसको एक नये बिल से रिप्लेस करें और फिर उसको यहां पर लायें क्योंकि इससे तो ब्यूरोक्रेट्स को पावर मिलती है। इसपर आप अपनी व्यवस्था दें। इस बिल को वापिस होना चाहिए।

MR. DEPUTY-SPEAKER: At this stage you can argue that any delegation of power is strengthening

[Mr. Deputy Speaker]

the hands of the bureaucracy. But under our Constitution—Shri Misra is there and he is just laughing at your point of order, if I may say so...

SHRI KAMESHWAR SINGH: It is his view but this is my point of order.

MR. DEPUTY-SPEAKER: We must be vigilant. If they are misused, the House will take cognisance of it.

Now Shri Goyal. Just five minutes.

श्री श्रीचन्द गोयल (चंडीगढ़) : उपाध्यक्ष महोदय, गिल सरकार के कायम होते समय, जो पंजाब के राज्यपाल महोदय हैं, उनकी उस वक्त क्या राय थी और अब 9 महीने गिल वजारत का अनुभव करने के बाद उनकी क्या राय है, उसके सम्बन्ध में मैं दल से ऊपर उठकर, जो उनकी रिपोर्ट है, उसमें से एक हवाला देना चाहता हूं। इसमें लिखा हुआ है :

"The Congress Legislature Party extended its support to the Gill Ministry. Such an arrangement was, *ab initio*, fraught with instability as the Gill Ministry consisted of and was led by legislators who were drawn together not by any ideological affinity but by a desire to gain political power.

* *

The inevitable outcome of lack of rapport was the use of governmental machinery by the Ministry to raise its own following.

* * *

The use of governmental authority for political purposes affected not only the Congress Legislature Party but has had a deleterious effect on the services also."

तो मैं यह निवेदन करना चाहता हूं कि गवर्नर महोदय आज यह रिपोर्ट दे रहे हैं। मेरा पक्का विश्वास है कि जिस समय हमारे शक्ति के भूखे कांग्रेसी भाइयों ने एक दल बदलने वाले व्यक्ति और उसके टोले की हुकूमत बनवाई और रात भर में एक नयी पार्टी का जन्म हो गया जिसकी कोई मेम्बरशिप नहीं, जिस पार्टी की कोई आइडियालोजी नहीं, केवल हुकूमत प्राप्त करने के लिए रात भर में जिस पार्टी का जन्म हुआ, उसका समर्थन हमारे कांग्रेसी भाइयों ने सिर्फ इसलिए किया क्योंकि उनकी राज करने की भूख तृप्त नहीं हुई थी। इस प्रकार से उन्होंने जो उस दल का समर्थन किया तो उसका नतीजा क्या निकला ? सारे पंजाब के अन्दर, जैसा कि इस रिपोर्ट में लिखा हुआ है, जो सरकारी कर्मचारी हैं वे भी मायूस हो गए हैं। उनके साथ जिस प्रकार का मुलूक गिल सरकार ने किया, जिस समय वे केयर टेकर गवर्नमेन्ट का काम कर रहे थे, उस वक्त के जो फैसले हैं जबकि कांग्रेस के प्रधान श्री निजलिंगप्पा साहब ने इस बात की घोषणा कर दी थी कि वे गिल सरकार को अपना समर्थन नहीं देंगे, उसके बाद उन्होंने जो काले कारनामे किए, सबार्डिनेट सर्विसेज़ सेलेक्शन बोर्ड के मेम्बरों की तनख्वाहें बहुत ज्यादा बढ़ा दीं, उसी प्रकार से एलेक्ट्रिसिटी बोर्ड के मेम्बरों की तनख्वाहें बढ़ा दीं और कितने ही लोगों को उन्होंने नयी-नयी पोस्ट्स पर लगा दिया, डाउटफुल इन्टेग्रिटी और नीचे कैलिबर के लोगों को ऊपर उठाया। इस 9 महीने के राज्य में उन्होंने जिस प्रकार से इन्सानियत से गिरा हुआ सुलूक सियासी मुखालिफों के साथ किया है, जिस प्रकार से झूठ मुकदमे बनाए हैं, जिस प्रकार सरकारी मशीनरी का दुरुपयोग किया है, यह रिपोर्ट उसकी गवाह है। और आज हमारे कांग्रेसी भाई, खासकर गृह राज्य मन्त्री, श्री शुक्ला जी यह कहना चाहते हैं कि हमने तो एक तजुर्बा किया है। मैं उनको एक छोटी सी कथा सुनाना चाहता

हूं। एक आदमी को प्याज खाने का शौक था। एक दूसरे ने कहा कि कितने प्याज खा सकते हो तो उसनें कहा अगर मुफ्त मिलें तो सौ खा सकता हूं। तो उसने कहा कि मैं देता हूं, तुम खाओ लेकिन इसके साथ एक शर्त भी है कि अगर तुम नहीं खा सके तो तुम्हारे सौ जूते भी पड़ेंगे। उसने कहा कि यह शर्त मंजूर है। उसने प्याज लेकर खाने शुरु कर दिए। 40—50 प्याज खाने के बाद उसके मुंह में चरचराहट होने लगी, आंखों में आंसू आ गए। तो उसने कहा कि मैं प्याज नहीं खाता, तुम जूते लगाना शुरु करो। जब उसके बीस पचीस जूते पड़े तो फिर उसने सोचा कि यह बड़ा कठिन काम है। उसके फिर कहा कि में प्याज ही खाऊंगा, जूते नहीं। उसने फिर प्याज़ खाने शुरू कर दिए। 10—15 प्याज खाने के बाद उसनें फिर अपने आप को जूतों के लिए पेश किया। और आखिर में नतीजा यह हुआ कि उसको सौ प्याज़ भी खाने पड़े और सौ जूते भी खाने पड़े। तो उसी प्रकार से हमारे कांग्रेसी भाई गिल सरकार को जो समर्थन दे रहे थे उसका भी वही नतीजा निकला है। आज कांग्रेस का बटा हुआ घर है। आज पंजाब में कांग्रेस कांग्रेस संस्था के रूप में नहीं रह गई है। कुछ तो गिल के समर्थक हैं और कुछ गिल के विरोधी हैं। गिल साहब साफ तौर पर कहा करते थे कि 15—20 कांग्रसियों के इस्तीफे मेरी जेब में हैं जब भी चाहूं उनको कांग्रेस से अलग कर अपने दल में शामिल कर सकता हूं।

तो मैं आपके माध्यम से दो तीन बातों की तरफ मन्त्री महोदय का ध्यान दिलाना चाहूंगा। आज वहां पर जो एड़वाइज़र्स मुकर्रर हुए हैं, पंजाब के काम की देख-रेख करने के लिए और गवर्नर को सलाह देने के लिए मैं समझता हूं वे दोनों ही छटे हुए लोग हैं। एक तो मध्य प्रदेश के चीफ सेक्रेटरी थे, श्री नोरोन्हा, उनको एडवाइजर के तौर पर दे दिया गया है। उसी प्रकार से एस० टी० सी० के चेयरमैन, श्री वी० पी० पटेल हैं जोकि वहां पर एडवाइजर के तौर पर मुकर्रर किए गए हैं। मुझें याद आ रहा है कि जहांतक मध्य प्रदेश के चीफ सेक्रेटरी का ताल्लुक है, वे बस्तर कांड के साथ जुड़े हुए थे। इसी प्रकार से जो पटेल साहब हैं, एस०टी०सी० के चेयरमैन, उनका भी वही हाल है। ये दोनों लोग डिस्क्रेडिटेड हैं। मैं तो यह समझता हूं कि मध्य प्रदेश की सरकार उनसे छुटकारा पाना चाहती थी इसीलिए उनको पंजाब के ऊपर लादा जा रहा है।

मैं निवेदन करना चाहता हूं कि यह जो कंसल्टेटिव कमेटी पालियामैंट के मैम्बर्स की बनाई गई है उस कमेटी को पूरे अधिकार देने चाहिएं। चूंकि पंजाब के अन्दर पिछले 6—7 महीने के अन्दर असेम्बलीं का सैशन नहीं हुआ, कोई लेजिस्लेटिव वर्क वहां नहीं हुआ इसलिए शायद पंजाब के सिलसिले में बहुत सारा लेजिस्लेटिव वर्क करने की आवश्यकता पड़ी है, नई-नई विधियां और कानून बनाने की आवश्यकता महसूस की गई है। उस के लिए मैं यह निवेदन करना चाहता हूं कि यह जो कंसल्टेटिव कमेटी है और चूंकि हम इस के द्वारा राष्ट्रपति को यह सारे अधिकार डैडीकेट करने जा रहे हैं इसलिए मैं समझता हूं कि पालिया-मैंट के मैम्बर्स की जो कमेटी बनाई गई है उस को भी पूरे विश्वास में लिया जाय। जो भी नया लेजिस्लेशन आये, नया कानून बने उन सब की कापियां इन ऐडवांस मैम्बरों के पास भेजी जांय ताकि वह उन्हें देख कर पूरी एक अपनी राय बना लें। ऐसा न हो कि जिस दिन समिति की बैठक होती हो उसी दिन उन

[श्री श्रीचन्द गोयल]

के सामने वह तमाम ड्राफ्ट बिल्स आयें और वह उन के ऊपर पूरी तौर पर विचार भी न कर सकें।

उपाध्यक्ष महोदय : माननीय सदस्य का समय समाप्त हो गया है। वह भाषण समाप्त करें।

श्री श्रीचन्द गोयल : बस मैं एक, आध निवेदन बहुत संक्षेप में कर के बैठ जाऊंगा। मैं यह निवेदन करना चाहता हूं कि जितने भी गिल सरकार के गैर-कानूनी हुक्म हैं, जितनी भी उन की गैर-कानूनी नियुक्तियां हुई हैं, जितने भी उन के गैर-कानूनी फैसले हुए हैं और खास तौर पर जो उन्होंने पिछले दिनों में किये हैं वह सब के सब रद्द होने चाहिए। जो मैमोरेंडम अपोजीशन पार्टियों ने गिल की खिलाफ़ दिया है उस की पूरे तौर पर और सरकारी तौर पर जांच होनी चाहिए।

इस के साथ-साथ मैं यह भी निवेदन करूंगा कि चव्हाण साहब ने पंजाब की ट्रान्सपोर्ट की और दूसरी सर्विसेज़ से यह वायदा किया था कि वह ऐसे राज्यों के अन्दर जहां पर कि राष्ट्रपति शासन होगा वहां पर हस्तक्षेप करके सरकारी कर्मचारियों की जो भी जायज तकलीफें व दुख होंगे उन को दूर करने का वह प्रयत्न करेंगे। मैं समझता हूं कि अब मौक़ा आ गया है जबकि वह अपने उस वायदे को पूरा करें। पंजाब में राष्ट्रपति शासन क़ायम हो गया है और वहां के सरकारी कर्मचारियों की जितनी भी शिकायतें है उन को वह सुनें और खास तौर पर जो ट्रान्सपोर्ट मुहकमे के कर्मचारियों के साथ गिल सरकार ने ज्यादतियां की थीं उन को वह दूर करने की कोशिश करें...

MR. DEPUTY-SPEAKER: You have already taken ten minutes. You should resume your seat. I have accommodated two members.

Mr. Dar only three minutes. Whatever you want to say, you should be very brief.

श्री अब्दुल गनी दार (गुड़गांव): उपाध्यक्ष महोदय, मैं पंजाब असेम्बली का 10 वर्ष से ज्यादा मैम्बर रहा हूं। मैं एक बात बिलकुल साफ़ कर दूं कि मैं राष्ट्रपति शासन पंजाब में क़ायम करने के लिए होम मिनिस्टर साहब को मुबारक़बाद देने के लिए खड़ा नहीं हुआ हूं। मैं किसी भी सूरत में राष्ट्रपति रूल किसी जगह नहीं चाहता। गिल से अगर उन्हें शिकायत थी तो उन को अधिकार था और वह उस को चीफ़ मिनिस्टरी से हटा सकते थे। उस पर वह मुकद्दमा भी चला सकते थे। अदालत में उस के ऊपर मुकद्दमा चलाते।

इस सिलसिले में मैं हाउस का ध्यान सरदार प्रताप सिंह कैरों जबकि वह चीफ़ मिनिस्टर पंजाब के होते थे दिलाना चाहता हूं। आज श्री प्रताप सिंह कैरों की श्री रणधीर सिंह ने बड़े जोर मे तारीफ़ की है। पंडित जवाहरलाल नेहरू हांलाकि वह श्री प्रतापसिंह कैरों के खिलाफ़ प्रोसीड नहीं करना चाहते थे। लेकिन वह हालात से मजबूर हो गये थे कि वह श्री कैरों के खिलाफ़ इनक्वायरी बैठायें तो इस गवर्नमेंट के सामने क्या मजबूरी थी कि अगर गिल के खिलाफ़ उन के पास शिकायतें थी तो वह उस के खिलाफ़ प्रोसीड नहीं कर सकते थे और उसे चीफ़ मिनिस्टरी से हटा नहीं सकते थे? लेकिन चूंकि वह गिल उधर से डिफैक्ट कर के इन की शरण में आया और युनाइटेड फ्रंट की गवर्नमेंट जोकि पंजाब में नॉन-कांग्रेस गवर्नमेंट थी वह टूटने जा रही थी इसलिए इन्होंने उसे सपोर्ट किया और इन की सरपरस्ती में उस ने पंजाब में अपनी गवर्नमेंट कुछ

अर्से तक चलाई । यही बंगाल में हुआ और यही बिहार और उत्तर प्रदेश में हुआ है तो इस के लिए मैं मिनिस्टर साहब को क्यों मुबारकबाद दूं ? अगर वह जालिम था तो वह उन का बनाया हुआ था और इन लोगों की सपोर्ट से उस ने पंजाब में 9 महीने चीफ़ मिनिस्टरी की और ऐसा तो है नहीं कि रातों रात उस के खिलाफ़ यह सारी बातें कांग्रेस के मेरे दोस्तों को मालूम हुई हैं और गिल के खिलाफ़ उन्हें रात को ख्वाब आया और पंजाब में उन्होंने राष्ट्रपति शासन 23 अगस्त को लागू कर दिया। आज श्री रणधीर सिंह और जो दूसरे कांग्रेस के भाई बोले हैं उन को चाहिए था कि वह पहले ही इस का कोई उपाय करते, इलाज करते।

वॉरेन हैस्टिंग्ज और लार्ड क्लाइव ने हिन्दुस्तान में अंग्रेज़ी राज्य क़ायम किया। उस वक्त अंग्रेज़ों को यहां कौन जानता था ? अंग्रेज़ों की उस ज़माने में कोई धाक नहीं थी लेकिन उन्होंने अपनी होशियारी से अंग्रेज़ी राज्य यहां पर कायम किया। लेकिन जब उस ने ग़लती की तो ब्रिटिश पार्लियामेंट ने ऐसी सज़ा दी जोकि दुनिया में अपनी एक मिसाल रखती है। इसी तरह अगर सरदार प्रताप सिंह कैरों के वक्त में उन से कुछ गलतियां या भूलें हुई तो उस की जांच करने के लिए एस० आर० दास कमिशन मुकर्रर किया गया। कमिशन ने फैसला हमारे हक़ में दिया था। इसी तरह से गिल के खिलाफ़ भी अगर आप के नजदीक उस ने कोई जुल्म किया है कोई गलतियां की है तो इनक्वायरी बैठानी चाहिए मैं उस के हक़ में हूं लेकिन राष्ट्रपति रूल कर दिया जाय यह मेरी समझ में नहीं आया। आखिर यह गिल की मिनिस्टरी आप की ही सपोर्ट पर बनी थी और उसे आपने ही बनाया और आप ने ही गिराया। जैसा मैं ने पहले कहा अगर गिल साहब के खिलाफ़ आप के पास शिकायतें थीं तो उन के ऊपर आप को मुकद्दमा चलाना चाहिए था। लेकिन इस तरह से वहां पर राष्ट्रपति शासन जो आप ने कर दिया है यह जम्हूरियत को खत्म करने वाला आप का क़दम मेरी समझ में नहीं आता है और मैं इस के लिए हरगिज मिनिस्टर साहब को मुबारकबाद नहीं दे सकता हूं। इसलिए अगर मंत्री महोदय अपने बारे में दिल पर हाथ रख कर गौर करेंगे तो उन को मेरी कही हुई बात सही मालूम होगी कि मैं उन्हें क्यों नहीं मुबारकबाद दे सकता । हालांकि बहुत सी पार्टियां राष्ट्रपति रूल पंजाब में क़ायम करने के लिए उन को मुबारकबाद दे रही हैं लेकिन चूंकि उन का यह क़दम जम्हूरियत के खिलाफ़ है इसलिए मैं उस में अपने को शामिल नहीं कर सकता। प्रेसीडेंट रूल हिन्दुस्तान में कहीं भी और किसी भी सूरत में कबूल नहीं किया जाना चाहिए। अलबत्ता जो मुजरिम हो उस को सज़ा मिलनी चाहिए और जम्हूरियत को जिंदा रहना चाहिए।

قاری عبدالغنی ڈار (گوڑگاؤں) :

اپادھکش مہودئے - میں پنجاب اسمبلی کا دس برس سے زیادہ ممبر رہا ہوں - میں ایک بات بالکل صاف کر دوں کہ میں راشٹرپتی شاسن پنجاب میں قائم کرنے کے لئے ہوم منسٹر صاحب کو مبارکباد دینے کے لئے کھڑا نہیں ہوا ہوں - میں کسی بھی صورت میں راشٹرپتی راج کسی جگہہ نہیں چاہتا - گل سے اگر انہیں شکایت تھی تو ان کو ادھیکار تھا اور وہ اس کو چیف منسٹری سے ہٹا سکتے تھے - اس پر وہ مقدمہ بھی چلا سکتے تھے - عدالت میں اس کے اوپر مقدمہ چلاتے -

اس سلسلے میں میں ہاؤس کا دھیان سردار پرتاپ سنگھہ کیروں جب کہ وہ چیف منسٹر پنجاب کے ہوتے

انہیں رات کو خواب آیا اور دفعتاً میں انہوں نے راشٹرپتی شاسن ۲۳ اگست کو لاگو کر دیا - آج شری رندھیر سنگھ اور جو دوسرے کانگریس کے بھائی بولے ہیں ان کو چاہیئے تھا کہ وہ پہلے ہی اس کا کوئی اپائے کرتے اور ملاپ کرتے -

وارن ہیسٹنگس اور لارڈ کلائیو نے ہندوستان میں انگریزی راج قائم کیا - اس وقت انگریزوں کو یہاں کون جانتا تھا - انگریزوں کی اس زمانے میں کوئی دھاک نہیں تھی لیکن انہوں نے اپنی ہوشیاری سے انگریزی راج یہاں پر قائم کیا - لیکن جب اس نے غلطی کی تو برٹش پارلیامینٹ نے ایسی سزا دی جو کہ دنیا میں اپنی ایک مثال رکھتی ہے - اس طرح اگر سردار پرتاپ سنگھ کیروں کے وقت میں ان سے کچھ غلطیاں یا بھولیں ہوئیں تو اس کی جانچ کرنے کے لئے ایس - آر - داس کمیشن مقرر کیا گیا - کمیشن نے فیصلہ ہمارے حق میں دیا تھا - اسی طرح سے گل کے خلاف بھی اگر آپ کے نزدیک اس نے کوئی ظلم کیا ہے، کوئی غلطیاں کی ہیں تو انکوائری بٹھانی چاہیئے میں اس کے حق میں ہوں لیکن راشٹرپتی راج کر دیا جائے یہ میری

نے دلانا چاہتا ہوں - آج شری پرتاپ سنگھ کیروں کی شری رندھیر سنگھ نے بڑے زور سے تعریف کی ہے - پنڈت جواہر لال نہرو حالانکہ وہ شری پرتاپ سنگھ کیروں کے خلاف پروسیڈ نہیں کرنا چاہتے تھے لیکن وہ حالات سے مجبور ہو گئے تھے کہ وہ شری کیروں کے خلاف انکوائری بیٹھائیں - اس گورنمنٹ کے سامنے کیا مجبوری تھی کہ اگر دل کے خلاف ان کے پاس شکایتیں نہیں تو وہ اس کے خلاف پروسیڈ نہیں کر سکتے تھے اور اسے چیف منسٹری سے ہٹا نہیں سکتے تھے - لیکن چونکہ وہ گل ادھر سے ڈیفکٹ کرکے ان کی شرن میں آیا اور یونائیٹڈ فرنٹ کی گورنمنٹ جو کہ پنجاب میں نان کانگریس گورنمنٹ تھی وہ ٹوٹ جا رہی تھی اس لئے انہوں نے اسے سپورٹ دیا اور ان کی سرپرستی میں اس نے پنجاب میں اپنی گورنمنٹ کچھ عرصہ تک چلائی - یہی بنگال میں ہوا اور یہی اترپردیش اور بہار میں ہوا ہے - تو اس کے لئے میں منسٹر صاحب کو کیوں مبارکباد دوں - اگر وہ ظالم تھا تو وہ ان کا بنایا ہوا تھا اور ان لوگوں کی سپورٹ سے اس نے پنجاب میں ۹ مہینے چیف منسٹری کی اور ایسا تو ہے نہیں کہ راتوں رات اس کے خلاف یہ ساری باتیں کانگریس کے ممبروں کو معلوم ہوئی ہیں اور دل کے خلاف

سمجھ میں نہیں آیا - آخر یہ گل
کی منسٹری آپ کی ہی سپورٹ پر
بنی تھی اور اسے آپ نے ہی بنایا
اور آپ نے ہی گرایا - جیسا میں نے
پہلے کہا اگر گل صاحب کے خلاف
آپ کے پاس شکایتیں تھیں تو ان کے
اوپر آپ کو مقدمہ چلانا چاہئے
تھا - لیکن اس طرح سے وہاں پر
راشٹرپتی شاسن جو آپ نے کر دیا
ہے یہ جمہوریت کو ختم کرنے
والا آپ کا قدم میری سمجھ میں
نہیں آتا ہے اور میں اس کے لئے
ہرگز منسٹر صاحب کو مبارکباد نہیں
دے سکتا ہوں - اس لئے اگر منتری
مہودے اپنے بارے میں دل پر ہاتھ
رکھ کر غور کریں گے تو ان کو میری
کہی ہوئی بات صحیح معلوم ہوگی
کہ میں انہیں کیوں نہیں مبارکباد
دے سکتا - حالانکہ بہت سی پارٹیاں
راشٹرپتی راج پنجاب میں قائم
کرنے کے لئے ان کو مبارکباد دے
رہی ہیں لیکن چونکہ ان کا یہ
قدم جمہوریت کے خلاف ہے اس لئے
میں اس میں اپنے کو شامل نہیں
کر سکتا - پریسیڈنٹ راج ہندوستان
میں کہیں بھی اور کسی بھی صورت
میں قبول نہیں کیا جانا چاہئے -
البتہ جو مجرم ہو اس کو سزا ملنی
چاہئے اور جمہوریت کو زندہ رہنا
چاہئے -]

SHRI VIDYA CHARAN SHUKLA: I am very happy that all sections of the House and all members who have taken part in this debate have supported the Motion I have had the privilege to move and the Bill that I brought forward for constituting a Consultative Committee for advising the President on legislative business for Punjab.

Since there has been no controversy about the Motion as such, I would limit myself briefly to some points raised by hon. members. Standing here, I hold no brief any political party. That is why I would not like to go into the various kinds of political allegations made by certain hon. members opposite against the political party to which I have the honour to belong. But still some remarks have been made which need some sort of clarification.

The hon. Member who spoke before me, Shri Shrichand Goel, waxed eloquence against the minority government and the support the Congress gave to that government. He forgets that he set the precedent for supporting minority governments when his party supported such a government in Haryana. At that time, *it* was all supposed to be very noble and right conduct. But when the Congress did the same thing, he comes up in this hon. House and tries to criticise it. I would only request hon. Members not to take politics into consideration while considering such matters for which we all feel sorry. Whenever President's rule has to be imposed on any State, it is no pleasure either for us or for any hon. Member here. But when we are dealing with such things, we at least try to keep politics completely away from such matters. I would suggest the same thing to hon. Members also so that these discussions can be conducted in a dispassionate manner.

The same thing about the former Chief Minister, Shri Lachman Singh Gill. I am not saying anything

against him or in his favour but these are the very people—Shri Indrajit Gupta, Shri Goel and others—whose political parties were responsible for making him a Minister for the first time in his lifetime. At that time, he was said to be a very good person and he was being praised all the time, but as soon as he defected from the United Front and formed his own Ministry, he became a very bad man. This is a kind of thing which does not appeal to anybody. It will not appeal to any hon. member sitting in this House. This only shows that while hon. Members comment on these things, they only keep politics in view and not the merits of the question. I want to make this appeal to the hon. Members that while considering these matters we should go by merits, and not party or political considerations.

SHRI RANGA: He has become a reasonable man now.

SHRI VIDYA CHARAN SHUKLA: In my opening remarks, I had said that we were anxious that elections should be held in Punjab as early as possible. We had already moved the Election Commission to consult the political parties and fix a date as soon as possible. I am sorry that Mr. Goel, compelled by political reasons again, had commented adversely and criticised a few officers whom he thought were going to be appointed as advisers in Punjab. I do not know how he got information about the past record of these officers who are serving in senior posts in various States. We have a convention here not to criticise the officers who are not here to defend themselves. It is an unhealthy trend if we begin to criticise them. There has been no official announcement so far that so and so has been appointed as adviser. Even if there was an announcement, it would be wrong for the hon. Members to stand up and criticise them without any basis in fact. I request Mr. Goel to be careful about such matters and I am quite sure that if he sees the work of the adviser we are going to appoint, he will not repeat his criticism. With these words, I commend the Resolution and the Bill to the House.

MR. DEPUTY-SPEAKER: The question is:

"That this House approves the Proclamation issued by the President on the 23rd August, 1968 under article 356 of the Constitution in relation to the State of Punjab."

The motion was adopted.

MR. DEPUTY-SPEAKER: The question is:

"That the Bill to confer on the President the power of the Legislature of the State of Punjab to make laws, be taken into consideration."

The motion was adopted.

MR. DEPUTY-SPEAKER: The question is:

"That clause 2 stand part of the Bill."

The motion was adopted.

Clause 2 was added to the Bill.

Clause 3—(*Conferment on the President of the power of the State Legislature to make laws.*)

MR. DEPUTY-SPEAKER: There are some amendments to clause 3.

Mr. Sequeira is not here. Mr. Abdul Ghani Dar.

SHRI ABDUL GHANI DAR: I beg to move:

Page 2, line 4,—

add at the end—

"and this power shall remain upto the 30th November, 1968." (1)

Page 2, line 8,—

after "necessary" *insert*—

"but not contrary to the Bills, Acts or Motions, passed by the elected Legislatures of Punjab" (2)

Page 2, line 14,—

for "State of Punjab" *substitute*—

"States of Punjab and Haryana and the Union territory of Himachal Pradesh" (4)

Page 2, line 18,—

for "State of Punjab" *substitute*—

"States of Punjab and Haryana and the Union territory of Himachal Pradesh" (5)

जैसा कि मैं ने अर्ज़ किया है, मैं इस बात को पसन्द नहीं करता हूं कि किसी सूबे में एक मिनट के लिए भी राष्ट्रपति का रूल रहे। वह पंजाब में लागू हो गया है, यह जानते हुए भी मैं ने यह एमेंडमेंट रखी है। हालांकि कांग्रेस पहले इलैक्शन में हारी और उस के बाद भी वह ताकत में नहीं आ सकी, लेकिन यह सच्चाई है कि अब वहां पर कांग्रेस का रूल होगा, चाहे राष्ट्रपति के नाम पर ही हो। कांग्रेस की तरफ़ से कहा जाता है कि अब लोग समझ गये हैं, पंजाब वालों की आंखे खुल गई हैं, कांग्रेस की बहुत बड़ी अक्सरियत आयेगी। मैं ने अपनी एमेंडमेंट में कहा है कि आप पावर इस्तेमाल कीजिए, लेकिन 30 नवम्बर तक कीजिए। आप अपने दिलों को खुश कर लें कि आप पंजाब के हुक्मरान हैं। लेकिन इस वक्त पंजाब में कोई झगड़ा-फ़साद नहीं है, कोई मुश्किल नहीं है, वहां पर फ्लड्ज़ नहीं आये हुए हैं, जिस की वजह से लोग वोट न दे सकें। आप का चाव भी पूरा हो जाये और 30 नवम्बर के बाद वहां पर चुनाव हो जायें। डेमोक्रेसी को ज़िन्दा रखने के लिए यह ज़रूरी है। अगर कांग्रेस वाले यह दावा करते हैं कि लोग उन के साथ हैं और आपोज़ीशन के साथ नहीं हैं, तो वे 30 नवम्बर तक राज कर लें और उस के बाद इलैक्शन करायें और देखें कि उन को क्या नतीजा मिलता है।

गवर्नमेंट की तरफ़ से इस बिल में कहा गया है कि वह एक कनसल्टेटिव कमेटी बनायेगी, जिस से राष्ट्रपति जी कोई कानून वग़ैरह लाने के बारे में मश्वरा कर लेंगे। लेकिन इस बिल में कहा गया है कि जहां तक प्रैक्टीकेबल होगा, वहां तक ऐसा किया जायेगा। मैं ने अपनी एमेंडमेंट के ज़रिये यह कहा है कि वह कमेटी बाकायदा एक तरह की छोटी एसेम्बली हो, उस को पूरी तरह से कान्फ़िडेंस में लिया जाये और उस को सब कानूनों वग़ैरह की नुक्ताचीनी करने का पूरा मौका दिया जाये।

[جیسا کہ میں نے عرض کیا ہے - میں اس بات کو پسند نہیں کرتا ہوں کہ کسی صوبے میں ایک منٹ کے لئے بھی راشٹرپتی کا رول رہے - وہ پنجاب میں لاگو ہو گیا ہے - یہ جانتے ہوئے بھی میں نے یہ امینڈمنٹ رکھی ہے - حالانکہ کانگریس پہلے الیکشن میں ہاری اور اسکے بعد بھی وہ طاقت میں نہیں آسکی ، لیکن یہ سچائی

ہے کہ اب وہاں پر کانگریس کا رول ہوگا ، چاہے راشٹرپتی کے نام پر ہی ہو - کانگریس کی طرف سے کہا جاتا ہے کہ اب لوگ سمجھ گئے ہیں ، پنجاب والوں کی آنکھیں کھل گئی ہیں ، کانگریس کی بہت بڑی اکثریت آئیگی - میں نے اپنی امینڈمنٹ میں کہا ہے کہ آپ پاور استعمال کیجئے ، لیکن ۳۰ نومبر تک کیجئے - آپ اپنے دلوں کو خوش کر لیں کہ آپ پنجاب کے حکمران ہیں - لیکن اسوقت پنجاب میں کوئی جھگڑا فساد نہیں ہے ، کوئی مشکل نہیں ہے ، وہاں پر فلڈز نہیں آئے ہوئے ہیں جسکی وجہ سے لوگ ووٹ نہ دے سکیں - آپ کا چاؤ بھی پورا ہو جائے اور ۳۰ نومبر کے بعد وہاں پر چناؤ ہو جائیں - ڈیموکریسی کو زندہ رکھنے کے لئے یہ بہت ضروری ہے - اگر کانگریس والے یہ دعوی کرتے ہیں کہ لوگ انکے ساتھ ہیں اور اپوزیشن کے ساتھ نہیں ہیں ، تو وہ ۳۰ نومبر تک راج کر لیں اور اس کے بعد الیکشن کرائیں اور دیکھیں کہ انکو کیا نتیجہ ملتا ہے -

گورنمنٹ کی طرف سے اس بل میں کہا گیا ہے کہ وہ ایک کنسلٹیٹو کمیٹی بنائے گی جس سے راشٹرپتی جی کوئی قانون وغیرہ لانے کے بارے میں مشورہ کر لیں گے - لیکن اس بل میں کہا گیا ہے کہ جہاں تک پریکٹیکل ہوگا وہاں تک ایسا کیا جائیگا - میں نے اپنی امینڈمنٹ کے ذریعے یہ کہا ہے کہ وہ کمیٹی باقاعدہ ایک طرح کی چھوٹی اسمبلی ہو ، اس کو پوری طرح سے کانفیڈنس میں لیا جائے اور اس کو سب قانونوں وغیرہ کی نکتہ چینی کرنے کا پورا موقع دیا جائے -]

MR. DEPUTY-SPEAKER: Does the Minister want to reply?

SHRI VIDYA CHARAN SHUKLA: No, Sir?

MR. DEPUTY-SPEAKER: I shall now put all the amendments to clause 3 to the House.

Amendments Nos. 1, 2, 4 and 5 were put and negatived.

MR. DEPUTY-SPEAKER: The question is:

"That clause 3 stand part of the Bill."

The motion was adopted.

Clause 3 was added to the Bill.

Clause 1, the Enacting Formula and the Title were added to the Bill.

SHRI VIDYA CHARAN SHUKLA: I beg to move:

"That the Bill be passed."

MR. DEPUTY-SPEAKER: The question is:

"That the Bill be passed."

The motion was adopted.

16·57 HRS.

CRIMINAL AND ELECTION LAWS AMENDMENT BILL

THE MINISTER OF STATE IN THE MINISTRY OF HOME AFFAIRS (SHRI VIDYA CHARAN SHUKLA): Sir, originally this Bill further to amend the Indian Penal